NCERT SOLUTIONS

CLASS - 10th

aglasem.com

Class : 10th
Subject : हिन्दी
Chapter : 16
Chapter Name : पतझर में टूटी पत्तियां

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिये-

Q1. शुद्ध सोना और गिन्नी का सोना अलग-अलग क्यों होता है ?
Ans. शुद्ध सोना और गिन्नी का सोना अलग-अलग इसलिए होता है क्योंकि गिन्नी के सोने में ताम्बा मिला हुआ होता जिसकी वजह से वह ज्यादा चमकता है और सभी को पसंद भी आता है |
Page no: 122, Block: मौखिक

Q2. प्रैक्टिकल आइडियलिस्ट किसे कहते हैं ?
Ans. प्रैक्टिकल आइडियलिस्ट उन्हें कहते हैं जो अपनी व्यावहरिकता को थोड़ा मिला-जुलाकर पेश करते हैं और जब जैसी जरुरत होती है उसी के मुताबिक बदल जाते हैं |.
Page no: 122, Block: मौखिक

Q3. पाठ के संदर्भ में शुद्ध आदर्श क्या है ?
Ans.पाठ के संदर्भ में शुद्ध आदर्श शुद्ध सोने के समान है | शुद्ध आदर्श में व्यावहरिकता मिली नहीं होती और शुद्ध आदर्श वाले लोग सिर्फ अपने बारे में नहीं बल्कि दूसरों के बारे में भी सोचते हैं |
Page no: 122, Block: मौखिक

Q4. लेखक ने जापानियों के दिमाग में स्पीड इंजन लगने की बात क्यों कही है ?
Ans. लेखक ने जापानियों के दिमाग में स्पीड इंजन लगने की बात इसलिए कही क्योंकि वहां के लोग हमेशा काम में ही लगे रहते हैं | वह एक महीने का काम एक दिन में ख़त्म करने की कोशिश करते हैं |
Page no: 122, Block: मौखिक

Q5. जापानी में चाय पीने की विधि को क्या कहते हैं ?
Ans. जापानी में चाय पीने की विधि को चो-नो-यू कहा जाता है |
Page no: 122, Block: मौखिक

Q6. जापान में चाय कहाँ पिलाई जाती है, उस स्थान की क्या विशेषता है ?
Ans. जापान में जहाँ चाय पिलाई जाती है वही लकड़ी की दीवारें और चटाई की ज़मीन है | यहाँ पर सबका स्वागत होता है और सारा काम बहुत ही गरिमा से होता है | वह पर इतनी शांति होती है की सब कुछ सुनाई देता है |
Page no: 122, Block: मौखिक
निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (25-30 शब्दों में) लिखिए

Q1. शुद्ध आदर्श की तुलना सोने से और व्यावहरिकता की तुलना ताम्बे से क्यों की गयी है ?
Ans. शुद्ध आदर्श की तुलना सोने से इसलिए करी गयी है क्योंकि इसमें कोई दिखावा और झूठ नहीं है और व्यावहरिकता की तुलना ताम्बे से इसलिए करी गयी है क्योंकि व्यावहरिकता ताम्बे की तरह ही आदर्शों के साथ मिल जाता है परन्तु वह सच नहीं होता |

Page no: 122, Block: लिखित

Q2. चाजीन ने कौन-सी क्रियाएं गरिमापूर्ण ढंग से पूर्ण की ?
Ans. चाजीन ने बड़ी गरिमा से सबका झुक कर स्वागत किया, बैठने की जगह दिखाई, अंगीठी जलाकर उस पर चाय बनने रखी, और चाय पीने के सभी बर्तन को तौलिये से बहुत ही अच्छी तरह से साफ़ करा था |
Page no: 122, Block: लिखित

Q3. टी-सेरेमनी में कितने आदमियों को प्रवेश दिया जाता था और क्यों ?
Ans. टी-सेरेमनी में तीन से ज्यादा अधिक व्यक्तियों को प्रवेश नहीं दिया जाता है क्योंकि टी-सेरेमनी की विधि मुख्य बात शांति है, और जितने कम लोग होंगे उतनी ही ज्यादा शांति होगी |
Page no: 122, Block: लिखित

Q4. चाय पीने के बाद लेखक ने स्वयं में क्या परिवर्तन महसूस किया ?
Ans. चाय पीने के बाद लेखक दस-पंद्रह मिनट तो उलझन में रहा लेकिन फिर उसके दिमाग की रफ़्तार धीरे-धीरे काम होने लगी | थोड़ी देर बाद उनका दिमाग बिलकुल शांत हो गया, इतना शांत की उनको सन्नाटा भी सुनाई पद रहा था |
Page no: 122, Block: लिखित
निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (50-60 शब्दों में) लिखीए

Q1. गाँधीजी में नेतृत्व की अद्भुत क्षमता थी; उद्धरण सहित इस बात की पुष्टि कीजिये |
Ans. गाँधीजी में नेतृत्व की अद्भुत क्षमता थी इसीलिए उनका भारत को आज़ादी दिलाने में बहुत बड़ा हाथ है | उन्होंने ने कभी आदर्शों को व्यावहरिकता के सामने गिरने नहीं दिया बल्कि उन्होंने व्यावहरिकता को आदर्शों के बराबर लाया था | उनके नेतृत्व के अंदर कई आंदोलन शुरू हुए, रैलियाँ निकली और कई बैठक भी बुलाई गयी | उन्होंने अपनी इस क्षमता से वो काम कर दिखाया जो कोई भी नहीं कर पाया था |
Page no: 122, Block: लिखित

Q2. आपके विचार से कौन-से ऐसे मूल्य है जो शाश्वत हैं ? वर्तमान समय में इन मूल्यों की प्रासंगिकता स्पष्ट कीजिये |
Ans. आज क समय में लोग आदर्शों की बजाय व्यावहरिकता पर ज्यादा ध्यान देते हैं और ये भूल जाते हैं की जीवन में आदर्श और व्यावहरिकता दोनों ही ज़रूरी हैं | पुराने समय में अच्छे मूल्य जैसे की ईमानदारी, अहिंसा, सच्चाई, परोपकार जितने ज़रुरी थे उतने हीज़रुरी आज भी हैं | अगर इंसान के अंदर ये विचार नहीं होंगे तो वह अच्छा इंसान नहीं कहलाएगा | इसीलिए मेरे विचार से यह सब बातें शाश्वत हैं |
Page no: 122, Block: लिखित

Q3.'शुद्ध सोने में ताम्बे की मिलावट या ताम्बे में सोने ', गांधीजी के आदर्श और व्यव्हार के सन्दर्भ में ये बात किस तरह झलकती है ? स्पष्ट कीजिये |
Ans. शुद्ध सोना अच्छे आदर्शों को दर्शाता है और ताम्बा मिला हुआ सोना व्यावहरिकता को | गांधीजी ने कभी भी आदर्शों को व्यावहरिकता के स्तर पर नहीं आने दिया था बल्कि उन्होंने

व्यावहरिकता को आदर्शों के बराबर लाया था | इससे यह पता चलता है की उन्होंने सोने में ताम्बा नहीं बल्कि ताम्बे में सोने को मिलाया था |
Page no: 122, Block: लिखित

Q4. 'गिरगिट' कहानी में आपने समाज में व्याप्त अवसरानुसार अपने व्यव्हार को पल-पल बदल डालने की एक बानगी देखी | इस पाठ के अंश 'गिन्नी का सोना' के सन्दर्भ में स्पष्ट कीजिये की 'आदर्शवादिता' और 'व्यहवारिकता' इनमे से जीवन में किसका महत्व है ?
Ans. जैसे 'गिरगिट' कहानी में यह बताया गया है की कैसे इंस्पेक्टर अपना रंग बदलता रहता है वैसे ही 'गिन्नी का सोना' कहानी में बताया गया है की कैसे व्यावहरिकता वाले लोग हर जगह अपना रूप बदलते रहते हैं | आदर्श लोग हमेशा एक से रहते हैं और व्यवाहरिक लोग मुश्किल आते ही बदल जाते हैं | हमारे जीवन आदर्शवादिता का ज्यादा महत्व है क्योंकि आदर्शवादी लोग हमेशा ईमानदार और सच्चे होते हैं लेकिन व्यवाहरिक लोग दूसरों की लाभ-हानि नहीं देखते सिर्फ अपने बारे में सोचते हैं |
Page no: 122, Block: लिखित

Q5. लेखक के मित्र ने मानसिक रोग के क्या-क्या कारण बताये ? आप इन कारणों से कहाँ तक सहमत हैं |
Ans. लेखक के मित्र ने बताया की आज के समय में ज़िंदगी की रफ़्तार बढ़ गयी है, आज-कल लीग चलने की बजाय दौड़ने लगे हैं | आज हम बोलते नहीं बड़बड़ाते हैं, और अकेले में भी खुद से बातें करते रहते हैं | हम आगे निकलने की होड़ में इतने व्यस्त हैं की हम एक महीने का काम एक ही दिन में करना चाहते हैं | हमारे दिमाग की रफ़्तार पहले से ही बहुत तेज़ होती है परन्तु हम उसे और तेज़ दौड़ना चाहते हैं | इसीलिए एक वक़्त ऐसा आता है की दिमाग में तनाव बहुत बाद जाता है और दिमाग काम करना बंद कर देता है | इसी वजह से लोगों में मानसिक रोग बढ़ गए हैं |
Page no: 123, Block: लिखित

Q6. लेखक के अनुसार सत्य केवल वर्तमान है, उसी में जीना चाहिए | लेखक ने ऐसा क्यों कहा होगा | स्पष्ट कीजिये |
Ans. लेखक ने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि आज के समय में सब आगे निकलने की होड़ में लगे हुए हैं, सब दौड़ने में लगे हुए है कोई भी ज़िंदगी को जी नहीं रहा है | या तो हम अपने बीते समय के बारे में सोचते रहते हैं या फिर अपने भविष्य की चिंता में लगे रहते हैं लेकिन अपने वर्तमान के बारे में नहीं सोचते | हम बस सबसे आगे निकलना चाहते है पर ये नहीं सोचते की हम अपने इस उद्देश्य में कितनो को नुकसान पंहुचा रहे है, हम बस ये सोचते हैं की भविष्य में इससे हमारा क्या फायदा होगा | इसलिए लेखक ने कहा की सत्य तो केवल वर्तमान में ही है जो बताता है की हम कैसे इंसान है, अच्छे या फिर बुरे |
Page no: 123, Block: लिखित

निम्नलिखित के आशय सपष्ट किजिए-

Q1. समाज के पास अगर शाश्वत मूल्यों जैसा कुछ है तो वह आदर्शवादी लोगों का दिया हुआ है |
Ans. समाज में सिर्फ आदर्शवादी लोग ही हैं जो अच्छे मूल्यों को समझते है और इस्तेमाल करते हैं | व्यवाहरिक लोग ऐसा नहीं करते हैं वह तो बस परिस्थितियों के साथ बदलते रहते हैं |
Page no: 123, Block: लिखित

Q2. जब व्यावहरिकता का बघान होने लगता हैं तब 'प्रैक्टिकल आइडिअलिस्टों' के जीवन से आदर्श धीरे-धीरे पीछे हटने लगते हैं और उनकी व्यवाहरिक सूझ-बूझ ही आगे आने लगती है |
Ans. 'प्रैक्टिकल आइडिअलिस्ट' आदर्शों का इस्तेमाल न कर व्यावहरिकता का इस्तेमाल करते हैं | क्योंकि व्यवाहरिक लोग ऐसे होते हैं जो परिस्तिथि के साथ-साथ बदलते रहते हैं | व्यवाहरिक लोगों के ज़िंदगी में आदर्शों की कमी होती है, और उनकी विचारधारा आदर्शवादी लोगों से बहुत अलग होती है |
Page no: 123, Block: लिखित

Q3. हमारे जीवन की रफ़्तार बढ़ गई है | यहाँ कोई चलता नहीं बल्कि दौड़ता है | कोई बोलता नहीं, बकता है | जब हम अकेले पड़ते हैं तब हम अपने आपसे लगातार बड़बड़ाते रहते हैं |
Ans. जापान के लोगों की जीवन की रफ़्तार बहुत ही ज्यादा है, वहां पर कोई खाली नहीं बैठता है सब हमेशा काम नहीं करते हैं | वह महीने भर का काम एक दिन में ही कर लेते हैं, जिससे उनके दिमाग पर बहुत ज़ोर पड़ता है और वह हमेशा तनाव में रहते हैं | इसी वजह से जब वह खाली बैठते है तो खुद से ही बातें करते रहते हैं |
Page no: 123, Block: लिखित

Q4. सभी क्रियाएं इतनी गरिमापूर्ण ढंग से कीं की उसकी हर भंगिमा से लगता था की मानो जयजयवंती के सूर गूँज रहे हों |
Ans. टी-सेरेमनी के समय बहुत इतनी शांति थी की सन्नाटा भी सुनाई पड़ रहा था | इस वजह से चाज़ें जो भी काम कर रहा था उसकी आवाज़ सुनाई डी रही थी, और यही आवाज़ें लेखक को जयजयवंती के सूर जैसी सुनाई दे रही थीं |
Page no: 123, Block: लिखित

भाषा अध्ययन
1 नीचे दिए गए शब्दों का वाक्य में प्रयोग कीजिये -
व्यावहरिकता - आज के समय में लोग व्यावहरिकता को ज्यादा इस्तेमाल करते हैं |
आदर्श - एक आदर्श व्यक्ति कभी झूठ नहीं बोलता है |
सूझ-बूझ - हमें मुश्किल में सूझ-बूझ से काम लेना चाहिए |
विलक्षण - वह एक विलक्षण योग्यता वाला युवक है |
शाश्वत - अच्छे आदर्श हमेशा शाश्वत होते हैं |

2. नीचे दिए गए द्वंद्व समास का विग्रह कीजिये -
क) माता-पिता = माता और पिता
ख) पाप-पुण्य = पाप और पुण्य
ग) सूख-दुख = सूख और दुख
घ) रात-दिन = रात और दिन
ड) अन्न-जल = अन्न और जल
च) घर-बहार = घर और बहार
छ) देश-विदेश = देश और विदेश

3. नीचे दिए गए विशेषण शब्दों की भाववाचक संज्ञा बनाइए -
क) सफल - सफलता

ख) विलक्षण - विलक्षणता
ग) व्यवहारिक - व्यावहरिकता
घ) सजग - सजगता
ड) आदर्शवादी - आदर्शवादिता
च) शुद्ध - शुद्धता

Q4 नीचे दिए गए वाक्यों में रेखांकित अंश पर ध्यान दीजिए और शब्द के अर्थ को समझिए - शुद्ध
सोना अलग है। बहुत रात हो गई अब हमें सोना चाहिए।
ऊपर दिए गए वाक्यों में 'सोना' का क्या अर्थ है? फ्हले वाक्य में 'सोना' का अर्थ है धातु 'स्वर्ण' दुसरे वाक्य में सोना का अर्थ है 'सोना' नामक किया। अलग - अलग संदर्भों में ये शब्द अलग अर्थ देते हैं अथवा एक शब्द के कई अर्थ होते हैं।ऐसे शब्द अनेकार्थी शब्द कहलाते हैं।नीचे दिए गए शब्दों के भिन्न - भिन्न अर्थ स्पष्ट करने के लिए उनका वाक्यो में प्रयोग कीजिए-
उत्तर,कर,अंक,नग
Answer:
क) उत्तर- मेरे सभी प्रश्नों के उत्तर सही है।
2. उत्तर- वह उत्तर दिशा में गया है।
ख) कर- मोहन ने अपना सारा कर चुका दिया है।
कर- मंत्री जी ने इस हॉस्पिटल का उदघाटन अपने कर कमलों से किया।
ग) अंक- राधा के अंक परीक्षा में अच्छे नहीं आये।
बच्चा अपने पिता के अंक में बैठा है।
घ) नग- हिमालय एक बड़ा नग है।
हीरा एक कीमती नग है।

Q5 नीचे दिए गए वाक्यों को संयुक्त वाक्य में बदलकर लिखिए-
क) अँगीठी सुलगायी।
2)उस पर चायदानी रखी।
ख) चाय तैयार हुई।
2) उसने वह प्याली में भरी।
ग) बगल के कमरे से जाकर कुछ बर्तन ले आया।
2) तौलिये से बरतन साफ़ किए।
Answer:
क) अँगीठी सुलगाई और उस पर चायदानी रखी।
ख) चाय तैयार हुई तो उसने वह प्याली में भरी।
ग) बगल के कमरे में जाकर कुछ बर्तन ले आया और तौलिए से बर्तन साफ़ किए।

Q6. नीचे दिए गए वाक्यों से मिश्र वाक्य बनाइए -
क) 1. चाय पीने की यह एक विधि है।
2) जापानी में उसे चा- नो- यू कहते हैं।
ख) 1. बाहर बेढ़ब - सा एक मिट्टी का बरतन था।
2) उसमें पानी भरा हुआ था।
ग) 1) चाय तैयार हुई।
2) उसने वह प्यालो में भरी।

aglasem.com

3) फिर वे प्याले हमारे सामने रख दिए।

Answer:

क) यह चाय पीने की एक विधि है जिसे जापानी में चा- तो- यू कहते हैं।

2) बाहर बेढ़ब सा एक मिट्टी का बरतन था जिसमें पानी भरा हुआ था।

ग) जब चाय तैयार हुई उसे प्यालों में भरा और हमारे सामने रख दिए।

पतझर में टूटी पत्तियाँ - पठन सामग्री और सार

aglasem.com